EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter)
Patron: Prof. R. G. Kothari
Chief Editor: Prof. Jignesh B. Patel
Email:- Mo. 9429429550 ctefeduinspire@gmail.com

"वसुधैव कुटुम्बकम":मानवता,शांति और विकास की ओर

अमित कुकरेजा
पारिजात ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशन,इंदौर (म.प्र)

प्रस्तावना

"वसुधैव कुटुम्बकम"—यह प्राचीन भारतीय सूत्र न केवल सांस्कृतिक दर्शन का प्रतीक है,बल्कि आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में मानवता, शांति और सतत विकास के लिए एक व्यवहारिक मार्गदर्शन भी है।इस शोध पत्र में हम इस विचारधारा की प्रासंगिकता और इसके प्रभावों का विश्लेषण करेंगे।

वसुधैव कुटुम्बकम का अर्थ और मूल

अयम् निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम् उदारचरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम्। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का संदेश,जिसे महाउपनिषद के छठे अध्याय के 71वें श्लोक में समाहित किया गया है,आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना कि हजारों वर्ष पूर्व था।इसके मूल में निहित विचार है कि 'अयम् निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्, उदारचरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम् अर्थात् : ससंकीर्ण मानसिकता वाले लोग 'मेरे और 'पराए' का भेद करते हैं,परन्तु विशाल हृदय वाले विश्व को एक परिवार के रूप में देखते हैं। यह विचारधारा भारतीय समाज के जीवन-दर्शन का सार है और वैश्विक संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता केवल बढ़ती ही जा रही है। वैश्विकरण के इस युग में, जब मानव समाज अनेक विभाजनों और विवादों का सामना कर रहा है, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का संदेश एक ऐसी आशा की किरण है जो हमें एकता, सहिष्णुता और सामूहिक कल्याण की ओर ले जाती है।इतिहास के पृष्ठों पर,चाहे वो विश्व युद्ध हों या आंतरिक संघर्ष,इस विचारधारा की प्रासंगिकता अविश्वसनीय रूप से मजबूत हुई है।वैश्विक संकटों के इन क्षणों में वसुधैव कुटुम्बकम् का दर्शन यह याद दिलाता है कि सामूहिक भलाई के लिए सहयोग और सह-अस्तित्व ही सच्चे मानवीय मूल्य है।

मानवता की भावना का विस्तार

वसुधैव कुटुम्बकम की भावना मानवता को एक व्यापक और समग्र दृष्टिकोण से देखने की प्रेरणा देती है, जो जाति, धर्म, भाषा, और भौगोलिक सीमाओं से परे है।यह विचारधारा हमें यह समझने के लिए प्रोत्साहित करती है कि हम सभी एक ही वैश्विक परिवार के सदस्य हैं,जिनके हित और कल्याण आपस में जुड़े हुए हैं। इस भावना का विस्तार निम्न पहलुओं में देखा जा सकता है:

सामाजिक समरसता : यह विचार सभी मानवों के बीच सहिष्णुता, समानता और सम्मान को बढ़ावा देता है,जिससे सामाजिक विभाजन और भेदभाव कम होते हैं।

वैश्विक जिम्मेदारी : वसुधैव कुटुम्बकम हमें पर्यावरण संरक्षण, गरीबी उन्मूलन, और मानवाधिकारों की रक्षा जैसे वैश्विक मुद्दों के प्रति जागरूक और सक्रिय बनाता है।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान : यह दृष्टिकोण विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद और समझ को प्रोत्साहित करता है, जिससे वैश्विक शांति और सहयोग को बल मिलता है।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

मानवता के प्रति करुणा : यह भावना करुणा,दया और परोपकार को बढ़ावा देती है,जो संकट के समय जैसे महामारी,युद्ध और प्राकृतिक आपदाओं में विशेष रूप से महत्वपूर्ण होती है।

शरणार्थी और प्रवासी सहायता : वसुधैव कुटुम्बकम की दृष्टि से शरणार्थी और प्रवासियों को मानवीय सहायता और सम्मान देना आवश्यक है,क्योंकि वे भी इस वैश्विक परिवार के सदस्य हैं।

इस प्रकार मानवता की भावना का विस्तार वसुधैव कुटुम्बकम के माध्यम से एक ऐसा सामाजिक और नैतिक ढांचा प्रस्तुत करता है जो विश्व के सभी लोगों को एकजुट करता है और एक शांतिपूर्ण,समृद्ध और न्यायसंगत समाज की स्थापना में सहायक होता है।

शांति की स्थापना में भूमिका

वसुधैव कुटुम्बकम का सिद्धांत शांति की स्थापना में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब हम सभी को एक परिवार मानते हैं, तो यह दृष्टिकोण संघर्षों को कम करने,संवाद को बढ़ावा देने और सहयोग को प्राथमिकता देने में सहायक होता है। यह विचारधारा व्यक्तिगत,सामाजिक और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शांति के लिए मार्ग प्रशस्त करती है।

व्यक्तिगत स्तर पर

यह सिद्धांत अहिंसा और करुणा की भावना को प्रोत्साहित करता है,जिससे व्यक्ति अपने विचारों,शब्दों और कर्मों में शांति बनाए रखते हैं। आंतरिक शांति और नैतिकता पर जोर देकर यह सामाजिक सद्भाव और सहिष्णुता को बढ़ावा देता है।

सामाजिक स्तर पर

वसुधैव कुटुम्बकम सामाजिक समरसता और समानता को बढ़ावा देता है,जिससे जाति,धर्म,भाषा या अन्य भेदभावों से उत्पन्न संघर्षों में कमी आती है। यह समुदायों के बीच संवाद,सहयोग को प्रोत्साहित करता है,जिससे सामाजिक स्थिरता और शांति सुनिश्चित होती है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर

यह सिद्धांत वैश्विक कूटनीति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में शांति और सहयोग की नींव रखता है।

भारत की विदेश नीति में वसुधैव कुटुम्बकम की झलक मिलती है,जो विश्व शांति सम्मेलनों और संयुक्त राष्ट्र के प्रयासों में परिलक्षित होती है। यह वैश्विक संघर्षों के समाधान के लिए संवाद, समझौता और सहिष्णुता को बढ़ावा देता है।

सांस्कृतिक और दार्शनिक योगदान

वसुधैव कुटुम्बकम का दर्शन अहिंसा और करुणा पर आधारित है,जो शांति की स्थापना के लिए आवश्यक नैतिक आधार प्रदान करता है। यह विचारधारा विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच सहिष्णुता और सम्मान को बढ़ावा देती है, जिससे सांस्कृतिक संघर्षों में कमी आती है। इस प्रकार वसुधैव कुटुम्बकम शांति की स्थापना के लिए एक समग्र और बहुआयामी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो व्यक्तिगत से लेकर वैश्विक स्तर तक शांति,सद्भाव और सहयोग को बढ़ावा देता है।

समावेशी और सतत विकास की दिशा

समावेशी और सतत विकास की दिशा में वसुधैव कुटुम्बकम का दर्शन एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक सिद्ध होता है।यह केवल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं है,बल्कि सामाजिक,पर्यावरणीय और नैतिक विकास को भी समाहित करता है।इस विचारधारा के अनुसार,विकास का उद्देश्य सभी वर्गों और समुदायों को साथ लेकर चलना और संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण सुनिश्चित करना है।

समावेशी विकास

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

समान अवसर : वसुधैव कुटुम्बकम सभी लोगों को बिना किसी भेदभाव के समान अवसर प्रदान करने पर जोर देता है, जिससे सामाजिक असमानताओं को कम किया जा सके।

सामाजिक न्याय : यह दर्शन सामाजिक न्याय और अधिकारों की रक्षा को प्राथमिकता देता है, जिससे कमजोर और वंचित वर्गों का सशक्तिकरण हो।

सांस्कृतिक समरसता : विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों के बीच सम्मान और सहयोग को बढ़ावा देकर सामाजिक समरसता सुनिश्चित करता है।

सतत विकास

पर्यावरण संरक्षण : वसुधैव कुटुम्बकम पर्यावरण संरक्षण को विकास का अभिन्न अंग मानता है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और पुनः उपयोग संभव हो।

संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण : यह दर्शन संसाधनों के न्यायपूर्ण और सतत उपयोग को बढ़ावा देता है, ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी संसाधन उपलब्ध रहें।

सतत विकास लक्ष्य (SDGs) : वसुधैव कुटुम्बकम के सिद्धांत संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप हैं, जैसे गरीबी उन्मूलन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा,जलवायु कार्रवाई और समानता।

वैश्विक सहयोग और नीति निर्माण

वसुधैव कुटुम्बकम का सिद्धांत वैश्विक सहयोग और नीति निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।यह दर्शन विश्व के विभिन्न देशों को एक परिवार के रूप में देखने की प्रेरणा देता है,जिससे साझा हितों और चुनौतियों के समाधान के लिए सामूहिक प्रयास संभव होते हैं।

वैश्विक सहयोग

बहुपक्षीय संवाद : वसुधैव कुटुम्बकम की भावना अंतरराष्ट्रीय मंचों पर बहुपक्षीय संवाद और सहयोग को प्रोत्साहित करती है,जिससे वैश्विक मुद्दों जैसे जलवायु परिवर्तन,स्वास्थ्य संकट और आर्थिक असमानता का समाधान संभव होता है।

साझा जिम्मेदारी : यह सिद्धांत देशों के बीच साझा जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देता है, जिससे वैश्विक समस्याओं के समाधान में सभी की भागीदारी सुनिश्चित होती है।

नीति निर्माण में भूमिका

नैतिक और दार्शनिक आधार:वसुधैव कुटुम्बकम नीति निर्माण के लिए एक नैतिक और दार्शनिक आधार प्रदान करता है,जो न्याय, समानता और सहिष्णुता पर आधारित होता है।

सतत और समावेशी नीतियाँ:यह दर्शन सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप नीतियाँ बनाने में सहायक होता है,जो सभी वर्गों और समुदायों को शामिल करती हैं।

वैश्विक शांति और सुरक्षा:नीति निर्माण में वसुधैव कुटुम्बकम शांति, सुरक्षा और सहयोग को प्राथमिकता देता है, जिससे अंतरराष्ट्रीय तनाव कम होते हैं और स्थिरता बढ़ती है।

भारत की भूमिका

भारत ने प्राचीन भारतीय दर्शन "वसुधैव कुटुम्बकम" को वैश्विक मंच पर एक नैतिक और दार्शनिक आधार के रूप में पुनः स्थापित किया है।विशेष रूप से, भारत की बहुपक्षीय कूटनीति और वैश्विक सहयोग में इस दर्शन की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

G20 अध्यक्षता : भारत ने 2023 में G20 अध्यक्षता के दौरान "वसुधैव कुटुम्बकम" को अपने एजेंडा का केंद्र बिंदु बनाया, जिससे वैश्विक नीति निर्माण में एक समावेशी और नैतिक दृष्टिकोण को बढ़ावा मिला।

वैश्विक स्वास्थ्य और शिक्षा : भारत ने कोविड-19 महामारी के दौरान वैश्विक स्वास्थ्य सहयोग को मजबूत किया, वैक्सीन वितरण और स्वास्थ्य संसाधनों के न्यायसंगत वितरण में सक्रिय भूमिका निभाई। शिक्षा और तकनीकी सहयोग के क्षेत्र में भी भारत ने कई पहलें शुरू कीं।

पर्यावरण और सतत विकास : भारत ने जलवायु परिवर्तन के खिलाफ वैश्विक प्रयासों में नेतृत्व किया, पेरिस समझौते के लक्ष्यों को समर्थन दिया और स्वच्छ ऊर्जा तथा पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता दी।

सांस्कृतिक कूटनीति : भारत ने अपनी सांस्कृतिक विरासत और वसुधैव कुटुम्बकम के सिद्धांतों के माध्यम से विभिन्न देशों के बीच संवाद और समझ को बढ़ावा दिया,जिससे वैश्विक शांति और सहयोग को बल मिला।

नैतिक नेतृत्व : भारत ने वैश्विक मंचों पर न्याय, समानता और सहिष्णुता के मूल्यों को स्थापित करने में सक्रिय भूमिका निभाई,जो वसुधैव कुटुम्बकम के दर्शन से प्रेरित है। इस प्रकार भारत की भूमिका न केवल कूटनीतिक और नीति निर्माण में है,बल्कि यह एक नैतिक और सांस्कृतिक नेतृत्व भी प्रदान करता है,जो वैश्विक समाज को एकजुट करने और स्थायी विकास तथा शांति की दिशा में मार्गदर्शन करता है। इस प्रकार, वसुधैव कुटुम्बकम वैश्विक सहयोग और नीति निर्माण में एक समग्र,नैतिक और व्यवहारिक दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो विश्व के सभी देशों को एकजुट कर एक शांतिपूर्ण और समृद्ध वैश्विक समाज की स्थापना में सहायक होता है।

निष्कर्ष

वसुधैव कुटुम्बकम का दर्शन आज के वैश्विक संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है।यह न केवल एक आदर्शवादी विचार है,बल्कि मानवता, शांति, और समावेशी विकास के लिए एक व्यवहारिक और नैतिक मार्गदर्शन भी प्रदान करता है। इस दर्शन के माध्यम से हम एक ऐसे विश्व की कल्पना कर सकते हैं जहाँ सभी जाति,धर्म,भाषा और संस्कृति के लोग एक परिवार की तरह मिल-जुलकर रहते हैं। इस विचारधारा को अपनाने से न केवल अंतरराष्ट्रीय संघर्षों और असमानताओं में कमी आएगी, बल्कि यह सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षणऔर सतत विकास को भी प्रोत्साहित करेगा।वसुधैव कुटुम्बकम के सिद्धांतों पर आधारित नीति निर्माण और वैश्विक सहयोग से एक न्यायसंगत, शांतिपूर्ण और समृद्ध विश्व की स्थापना संभव है।

संदर्भ सूची

महोपनिषद्,संस्कृत ग्रंथ

भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, भारत की विदेश नीति में वसुधैव कुटुम्बकम (2023)

संयुक्त राष्ट्र,सतत विकास लक्ष्य (SDGs),आधिकारिक दस्तावेज

G20 शिखर सम्मेलन 2023,आधिकारिक रिपोर्ट

शर्मा राजीव, वैश्विक शांति और समावेशी विकास में वसुधैव कुटुम्बकम का योगदान, अंतरराष्ट्रीय जर्नल ऑफ़ सोशल साइंसेज,2024

भारत दर्शन,भारतीय संस्कृति और वैश्विक सहयोग,2022

संयुक्त राष्ट्र शांति सम्मेलन, 2023,आधिकारिक प्रकाशन

पटेल सीमा,सतत विकास लक्ष्यों में भारतीय दर्शन की भूमिका,पर्यावरण अध्ययन पत्रिका,2023

संपादकीय,Voices अभिव्यक्ति,Gargi College Annual Magazine 2023-24

कुमारी रश्मि, वसुधैव कुटुम्बकम: एक समकालीन दृष्टिकोण, भारतीय दार्शनिक समीक्षा, 2024